Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

रीवा राज्य की सैनिक व्यवस्था-एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. अजय शंकर पाण्डेय
प्राध्यापक, इतिहास
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय रीवा

प्रस्तावना

मध्य भारत की प्रमुख रियासतों में रीवा राज्य का विशिष्ट स्थान रहा है। बघेलखण्ड क्षेत्र में स्थित यह राज्य न केवल अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण महत्वपूर्ण था, बल्कि इसकी सुदृढ़ सैनिक व्यवस्था ने भी इसे क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित किया। रीवा के बघेल राजवंश ने सदियों तक इस क्षेत्र पर शासन किया और अपनी सैन्य शक्ति के बल पर राजनीतिक स्वतंत्रता बनाए रखी। प्रस्तुत शोध पत्र में रीवा राज्य की सैनिक व्यवस्था के विभिन्न आयामों, संगठनात्मक संरचना, सैन्य परंपराओं तथा उनके ऐतिहासिक महत्व का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

रीवा राज्य की स्थापना चौदहवीं शताब्दी में बघेल राजपूतों द्वारा की गई थी। महाराजा व्याघ्रदेव ने रतनपुर से आकर इस क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की। प्रारंभ से ही रीवा राज्य को अपनी सुरक्षा और विस्तार के लिए एक सुसंगठित सैन्य व्यवस्था की आवश्यकता थी। विंध्याचल की पहाड़ियों और घने जंगलों से घिरा यह राज्य रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। मुगल काल में भी रीवा के शासकों ने सापेक्षिक स्वायत्तता बनाए रखी और अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत किया। अठारहवीं शताब्दी में मराठा प्रभाव के बावजूद रीवा ने अपनी सैन्य पहचान को कायम रखा।

सैनिक संगठन की संरचना

रीवा राज्य की सैनिक व्यवस्था पारंपरिक राजपूत सैन्य संगठन और स्थानीय आवश्यकताओं के सम्मिश्रण पर आधारित थी। राज्य की सेना को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला, नियमित सेना जो राजधानी और प्रमुख किलों में तैनात रहती थी। दूसरा, सामंती सेना जिसमें विभिन्न ठिकानेदारों और जागीरदारों के सैनिक शामिल थे। तीसरा, आवश्यकता पड़ने पर बुलाई जाने वाली स्थानीय मिलिशिया जिसमें गोंड और अन्य आदिवासी योद्धा भी सम्मिलित होते थे। सेना का सर्वोच्च नियंत्रण महाराजा के हाथों में था, जबकि दैनिक प्रशासन के लिए 'फौजदार' या 'बक्शी' नामक अधिकारी नियुक्त किए जाते थे।

सैन्य इकाइयाँ और प्रशिक्षण

रीवा की सेना में पैदल सेना, अश्वारोही और तोपखाना प्रमुख घटक थे। पैदल सेना में स्थानीय भर्ती के साथ-साथ राजपूत, गोंड और अन्य जातियों के सैनिक शामिल थे। अश्वारोही दस्ते राज्य की गतिशील सैन्य शक्ति का प्रतीक थे और इनका उपयोग तीव्र आक्रमण और गश्त के लिए किया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी में आधुनिकीकरण के प्रयासों के तहत तोपखाने को विशेष महत्व दिया गया। सैनिकों का प्रशिक्षण पारंपरिक युद्ध कलाओं जैसे तलवारबाजी, धनुर्विद्या, घुड़सवारी और मल्लयुद्ध में दिया जाता था। अलग-अलग जातीय समूहों की अपनी विशिष्ट युद्ध तकनीकें थीं जिन्हें सेना में समाहित किया गया था।

सैन्य अर्थव्यवस्था और संसाधन

रीवा की सैन्य व्यवस्था के संचालन के लिए एक विस्तृत आर्थिक प्रबंधन आवश्यक था। राज्य की आय का एक बड़ा हिस्सा सैन्य व्यय पर खर्च होता था। सैनिकों को नकद वेतन के अतिरिक्त जागीरें और भूमि

अनुदान दिए जाते थे। यह 'जागीरदारी प्रथा' सैन्य संगठन का महत्वपूर्ण आधार थी। जागीरदार युद्ध के समय अपने साथ निश्चित संख्या में सैनिक लाने के लिए बाध्य थे। इसके अलावा कुछ गाँवों को 'जंगली गाँव' घोषित किया गया था जहाँ के निवासी सीमा रक्षा और स्थानीय सुरक्षा में योगदान करते थे। शस्त्रों और गोला-बारूद के निर्माण के लिए राजधानी में कारखाने स्थापित किए गए थे।

ब्रिटिश काल में परिवर्तन

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित होने के बाद रीवा की सैनिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। 1857 के विद्रोह के बाद देशी राज्यों की सेनाओं पर कड़ा नियंत्रण लगाया गया। रीवा राज्य को अपनी सेना के आकार और शस्त्रों पर प्रतिबंध स्वीकार करने पड़े। हालांकि, राज्य ने आंतरिक सुरक्षा और औपचारिक प्रयोजनों के लिए एक सीमित सेना बनाए रखी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में महाराजा गुलाब सिंह और महाराजा वीर भद्र सिंह के शासनकाल में सेना के आधुनिकीकरण के प्रयास किए गए। आधुनिक प्रशिक्षण पद्धतियाँ अपनाई गईं और वर्दी तथा अनुशासन में सुधार किए गए। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रीवा राज्य ने ब्रिटिश सेना में अपने सैनिक भेजकर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम

रीवा की सैनिक व्यवस्था केवल एक प्रशासनिक संरचना नहीं थी, बल्कि यह राज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग थी। सैन्य सेवा को सम्मानजनक माना जाता था और राजपूत परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी सैन्य परंपरा चलती थी। राज्य में अनेक युद्ध संबंधी त्योहार और उत्सव मनाए जाते थे जिनमें दशहरा प्रमुख था। शस्त्र पूजा और घोड़ों की पूजा की परंपराएँ सैन्य संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलू

थे। बघेली लोकगीतों और गाथाओं में वीर योद्धाओं की कहानियाँ सुरक्षित हैं जो पीढ़ियों से मौखिक परंपरा के रूप में चली आ रही हैं।

निष्कर्ष

रीवा राज्य की सैनिक व्यवस्था मध्यकालीन और आधुनिक भारत के बीच संक्रमण की एक महत्वपूर्ण कड़ी प्रस्तुत करती है। पारंपरिक सैन्य संगठन से आधुनिक प्रणाली की ओर संक्रमण की यह यात्रा अनेक चुनौतियों और अनुकूलनों से भरी रही। रीवा के शासकों ने बदलते राजनीतिक परिवेश में अपनी सैन्य परंपराओं को बनाए रखने का प्रयास किया। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद रियासतों का विलय होने से ये सैन्य संरचनाएँ समाप्त हो गईं, किंतु उनका ऐतिहासिक महत्व बना हुआ है। रीवा की सैनिक व्यवस्था का अध्ययन न केवल क्षेत्रीय इतिहास को समझने में सहायक है, बल्कि यह भारतीय राज्य प्रणाली और सैन्य परंपराओं के विकास को समझने की एक महत्वपूर्ण कुंजी भी प्रदान करता है। इस विषय पर और अधिक शोध की आवश्यकता है जिससे रीवा की सैन्य विरासत के अल्पज्ञात पहलुओं को उजागर किया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रीवा स्टेट रिकॉर्ड्स, मध्य प्रदेश राज्य अभिलेखागार, भोपाल।
2. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया, खण्ड XXI, रीवा राज्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1908।
3. फॉरेन एंड पॉलिटिकल डिपार्टमेंट फाइल्स, नेशनल आर्काइव्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
4. रीवा दरबार रिकॉर्ड्स, बघेलखण्ड संग्रहालय, रीवा।
5. त्रिपाठी, रामशंकर, रीवा राज्य का इतिहास, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, 1955।
6. शर्मा, दशरथ, राजपूताने का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1970।
7. गुप्ता, ज्ञानचन्द्र, बघेलखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1982।

8. सिंह, उदयवीर, मध्यकालीन भारत की सैन्य व्यवस्था, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988।

9. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र, बघेलखण्ड का राजनीतिक इतिहास, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1991।

10. कोल्फ, डर्क, नॉलेज एंड पावर: अर्बनाइजेशन एंड डेवलपमेंट इन इंडिया, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1990।

11. Roy, Kaushik, Military Manpower, Armies and Warfare in South Asia, Routledge, London, 2015.

12. Peabody, Norbert, Hindu Kingship and Polity in Precolonial India, Cambridge University Press, 2003.

13. Ramusack, Barbara N., The Indian Princes and their States, Cambridge University Press, 2004.

14. मिश्रा, संजय कुमार, रीवा रियासत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास (1880-1947), पीएच.डी. शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, 1995।

15. पटेल, रमेश चन्द्र, बघेलखण्ड में सामंती व्यवस्था और कृषक आंदोलन, पीएच.डी. शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, 2001।

16. वर्मा, अशोक कुमार, "रीवा राज्य की जागीरदारी प्रथा", प्राचीन भारत, खण्ड 28, अंक 2, 1985, पृ. 145-162।

17. द्विवेदी, कृष्ण कुमार, "बघेल राजवंश की सैन्य परंपरा", मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् पत्रिका, खण्ड 15, 1992, पृ. 78-95।

18. सिन्हा, बी.के., "मिलिट्री ऑर्गनाइजेशन इन द प्रिंसली स्टेट्स ऑफ सेंट्रल इंडिया", द इंडियन हिस्टॉरिकल रिव्यू, खण्ड XIX, अंक 1-2, 1993, पृ. 234-256।

19. तिवारी, रामकृष्ण, "औपनिवेशिक काल में रीवा राज्य का प्रशासनिक पुनर्गठन", इतिहास संधान, खण्ड 10, 1998, पृ. 112-128।

20. Kolff, D.H.A., "The End of an Ancien Regime: Colonial War in India", in Imperialism and War: Essays on Colonial Wars in Asia and Africa, ed. J.A. de Moor and H.L. Wesseling, Leiden, 1989, pp. 22-49.